कलीसिया परिशिष्ट 9

[कलीसिया निर्माण की सेवकाई]
मसीही परिवार में बच्चों को अनुशासित करना

परिचय दें। मसीही परिवार में बच्चों को प्रशिक्षण देने का एक महत्वपूर्ण हिस्सा अनुशासन है। इब्रानियों 12:5-6 कहता है, "हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता है, उसकी ताड़ना भी करता है।" और नीतिवचन 3:12 कहता है, "क्योंकि यहोवा जिससे प्रेम रखता है उसको डाँटता है, जैसे कि बाप उस बेटे को जिसे वह अधिक चाहता है।" परमेश्वर के वचन के अनुसार, अनुशासन प्रेम की अभिव्यक्ति है। इसलिए, अनुशासन को कभी अनियंत्रित क्रोध या अन्यायपूर्ण दण्ड की अभिव्यक्ति नहीं बनाना चाहिए। अनुशासन का प्रयोग हमेशा सच्चाई और प्रेम के वातावरण में किया जाना चाहिए।

1. अनुशासन प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

खोजें और चर्चा करें। अनुशासन प्रशिक्षण का एक हिस्सा किस प्रकार से है?

- ***पढ़ें*** नीतिवचन 22:6 - नीतिवचन 22: 6 में "शिक्षा" (Hebrew: chanak) शब्द और इफिसियों 6:4 में "शिक्षा और चेतावनी" शब्द (Greek: paideia, nouthesia) का अर्थ विशेष रूप से, *अनुशासन और सुधार के माध्यम से अच्छी आदतों को हासिल करना है।*
- ***पढ़ें*** इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21 - ध्यान दें कि परमेश्वर के वचन के अनुसार, पिता अपने बच्चों के अनुशासन और प्रशिक्षण के लिए उत्तरदायी हैं। यद्यपि माताएँ इस क्षेत्र में पिताओं की सहायता करती हैं, लेकिन पिता परमेश्वर द्वारा दिए गए अपने इस उत्तरदायित्व को अनदेखा नहीं कर सकते!
- ***पढ़ें*** इब्रानियों 12:10-11 - "वे तो अपनी-अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिये ताड़ना करते थे, पर यह तो हमारे लाभ के लिये करता है, कि हम भी उसकी पवित्रता के भागी हो जाएँ। और वर्तमान में हर प्रकार की ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उसको सहते-सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है।" अनुशासन का मुख्य रूप से अर्थ, बच्चे को बात का उल्लंघन करने के लिए दण्डित करने से नहीं है। इसका मतलब है कि *उस बच्चे को उस बात की शिक्षा देनी चाहिए जिस पर उसे चलना है* (नीतिवचन 22:6)। इसलिए, सच्चा प्रेम एक बच्चे को वैसी ही शिक्षा देगा जिस पर उसे चलना चाहिए। लेकिन प्रेम एक बच्चे को कठोरता से अनुशासित नहीं करेगा, क्योंकि परमेश्वर पिता अपने बच्चों को रिस या क्रोध दिलाने से मना करता है। रिस दिलाने का अर्थ क्रोध को उत्तेजित करना है। क्रोध दिलाने से चिड़चिड़ाहट होती है। माता-पिता का इस प्रकार का व्यवहार एक बच्चे को हतोत्साहित करता है। यदि माता-पिता अपने बच्चे से प्रेम करते हैं, तो वे उसे अनुशासित करेंगे, लेकिन वे उसे हतोत्साहित नहीं करेंगे। अनुशासन का बड़ा लाभ यह है कि यह बच्चे को परमेश्वर के साथ अपने सम्बन्ध में पवित्र होने के लिए प्रशिक्षित करता है, ताकि वह अपने जीवन में अन्य लोगों के साथ सही सम्बन्ध बना सके और अपने हृदय में शान्ति ला सके।

2. अनुशासन का अर्थ रेखाओं या सीमाओं को निर्धारित करना है।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर और माता-पिता किन क्षेत्रों में सीमाओं को निर्धारित करते हैं?

(1) परमेश्वर और माता-पिता विभिन्न प्रकार की सीमाएँ निर्धारित करते हैं।

- ***पढ़ें*** व्यवस्थाविवरण 5:17-21 - दस आज्ञाएँ दस महत्वपूर्ण सीमाएँ हैं। उनके बिना, समाज का परमेश्वर और

अपने पड़ोसी से सम्बन्ध टूट सकता है!

- ***पढ़ें*** मत्ती 5:13-16; भजन 1:1; भजन 119:37; नीतिवचन 1:10-15; 4: 14-15,23-27; 5:1-8; 6:20-29; 7:24-27; 1 कुरिन्थियों 15:33 "बुरी संगति अच्छे चरित्र को खराब कर देती है"। यद्यपि मसीहियों को दूसरों लोगों पर अपना प्रभाव डालना बन्द नहीं करना चाहिए और इसलिए उन्हें समाज में सम्मिलित होने से पीछे नहीं हटना चाहिए, इसलिए परमेश्वर और माता-पिता क़रीबी लोगों से जुड़े सम्बन्धों में एक सीमा को निर्धारित करते हैं। मसीहियों को दुष्टों, मजाक उड़ाने वालो, बुरे काम करने के लिए मजबूर करनेवालो, जुआरी, अपराधियों, व्यभिचारियों, आदि जैसे लोगों के साथ क़रीबी सम्बन्ध बनाने से बचना चाहिए। मसीहियों को स्वयं यह नहीं सोचना चाहिए कि बुरी संगति उनके चरित्र को खराब नहीं करेगी!

(2) सीमाएँ निर्धारित करने के कारण।

खोजें और चर्चा करें। परमेश्वर और माता-पिता इन सीमाओं को क्यों निर्धारित करते हैं?

पढ़ें 1 कुरिन्थियों 8:9; गलातियों 5:1,13,24; 1 पतरस 2:16

ध्यान दें। अगर माता-पिता अपने बच्चों से प्रेम करते हैं, तो वे उन्हें अनियंत्रित स्वतंत्रता नहीं देंगे! असली प्रेम एक बच्चे के चारों ओर एक रेखा को खींचता है ताकि वह सही व गलत, और अच्छे व बुरे के बीच का अन्तर जान सकें। एक बच्चे के चारों ओर स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना उनकी इन सीमाओं के भीतर सुरक्षित महसूस करने में मदद करता है। सीमाएँ उसे बुरे परिणामों को समझने में सहायता करती हैं और अगर वह उस सीमा के बाहर जाता है तो उससे वह स्वयं और अन्य लोग दु:खी होते हैं! उन सीमाओं के बिना, एक बच्चे को यह पता नहीं चलेगा कि क्या अच्छा है और क्या बुरा और इसके परिणामस्वरूप वह अपने कार्यों के परिणामों का मूल्याँकन नहीं कर पाएगा। सीमाएँ बाड़े के रूप में कार्य करती हैं। वे एक बच्चे की रक्षा करती हैं। वे उसे जानने और महसूस करने में सहायता करती हैं कि जब वह इन बाड़ों के भीतर रहता है, तो वह उन बातों को करता है जिससे परमेश्वर और उसके माता-पिता खुश होते हैं।

सीमाओं को अक्सर परिवार के घर के नियमों में सारांशित किया जाता है। माता-पिता स्पष्ट रूप से अपने बच्चों को यह बताते हैं कि उनके घर के नियम क्या हैं, और वे क्यों महत्वपूर्ण हैं। माता-पिता के पास अनावश्यक नियम नहीं होने चाहिए, लेकिन उन्हें एक स्पष्ट सीमा निर्धारित करनी चाहिए। उदाहरण के तौर पर, माता-पिता को विशेष रूप से बेईमानी (झूठ बोलने आदि), अपमान करने और अनाज्ञाकारिता के प्रति अपने बच्चों को अनुशासित करना चाहिए। बच्चे के लिए स्पष्ट सीमाएँ निर्धारित करना उनके लिए सुरक्षा प्रदान करने का एकमात्र तरीक़ा है, ताकि उसे इस बात का पता रहेगा कि वह हर समय क्या कर सकता है या क्या नहीं कर सकता। जब कोई बच्चा अपने घर में रेखाओं या सीमाओं का सम्मान करना सीख जाता है, तो वह शायद समाज में पाई जाने वाली सीमाओं के साथ-साथ परमेश्वर द्वारा निर्धारित सीमाओं का भी सम्मान करेगा।

3. अनुशासन का मतलब डाँटना और सुधार करना है।

(1) डाँटने की आवश्यकता।

पढ़ें 1 शमूएल 2:22-24; 3:12-13; नीतिवचन 27:5।

खोजें और चर्चा करें। एली नामक पिता अपने बच्चों को अनुशासित करने में किस प्रकार असफल रहा?

ध्यान दें। एली के दो बेटे थे जिन्होंने बहुत बुरे काम किये थे। उसने अपने दोनों बेटों से *बहुत बातें की,* लेकिन वह उन्हें *दण्डित करने* और *रोकने में नाकाम रहा।* उसने उनसे कहा, "तुम ऐसे-ऐसे काम *क्यों* करते हो?" यह ताड़ना देना नहीं है, बल्कि किसी काम को करने से रोकने के लिए आग्रह करना है। इसकी बजाय, उसे अपने दुष्ट बेटों से यह पूछना चाहिए था, "तुमने यह *क्या* किया?" उसे उन्हें उनकी दुष्टता और उनके परिणामों से उनका सामना करवाना चाहिए था। उसे उन्हें उनके द्वारा किये गये पाप के लिए दण्डित करना चाहिए था!

(2) डाँटने के विभिन्न पहलु।

खोजें और चर्चा करें। बाइबल के अनुसार, एक बच्चे को डाँटने (Greek: elenchó) के विभिन्न पहलु क्या हैं?

- ***पढ़ें*** इफिसियों 5:11 – माता-पिता अपने बच्चे द्वारा किये गए उस विशेष पाप को उजागर (Greek: elenchó) करते हैं। उनके बच्चे को स्पष्ट रूप से पता होना चाहिए कि उसने क्या अपराध किया है। माता-पिता को यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उनके बच्चे को यह मालूम हो कि परमेश्वर और उसके माता पिता, दोनों की दृष्टि में वह कार्य गलत *क्यों* था।
- ***पढ़ें*** नीतिवचन 27:5-6; 28:23 – तब माता-पिता अपने बच्चे को डाँटकर या उसके द्वारा किये गए कार्य को अस्वीकार करके उसकी ताड़ना (Greek: elenchó) करते हैं।
- ***पढ़ें*** तीतुस 1:9 – यदि आवश्यक हो, तो माता-पिता उस समय अपने बच्चे के उन तर्कों को अस्वीकार करें (Greek: elenchó) जब वे बिना किसी अच्छे कारण के स्वयं को सही ठहराने की कोशिश करते हैं। हालाँकि, माता-पिता को अपने बच्चे द्वारा किये गए कार्य को समझाने का एक अवसर प्रदान करना चाहिए। उनके बच्चे के पास एक अच्छा तर्क या कारण भी हो सकता है जिसे शायद माता-पिता ने अनदेखा कर दिया हो। यदि कभी भी माता-पिता अपने बच्चे पर गलत अनुमान या अवाँछित आरोप लगाते हैं तो उन्हें उससे क्षमा माँगनी चाहिए।
- ***पढ़ें*** यूहन्ना 16:8 – इस बीच माता-पिता चुपचाप प्रार्थना करें ताकि पवित्र आत्मा स्वयं बच्चे को उसके द्वारा किये गए गलत कार्य को मानने के लिए तैयार करे (Greek: elenchó) और उस अपराध की गंभीरता (Greek: elenchó) को वह समझे, ताकि वह दोषी ठहरे या अपने उस अपराध के कारण शर्मिंदगी को महसूस करे और उस कार्य के लिए पश्चाताप करे।
- ***पढ़ें*** 2 तीमुथियुस 3:16 – अन्त में, माता-पिता अपने बच्चे को उसी मार्ग पर चलने में सहायता करें जिस पर उसे चलना हो और उसे सुधारें (Greek: elenchó)।
- ***पढ़ें*** इब्रानियों 12:6; नीतिवचन 22:15 – और यदि उनका बच्चा मूर्खतापूर्ण, घमण्डी या झगड़ालू होने के कारण आज्ञा नहीं मानता है, और अपने माता-पिता के विरूद्ध अपने हृदय को कठोर कर लेता है या अपने माता-पिता के अधिकार को चुनौती देता है, तो माता-पिता को अपने बच्चे को उचित तरीक़े से दण्डित करना चाहिए (Greek: elenchó)।

4. अनुशासन का मतलब उचित पुरस्कार देना है।

खोजें और चर्चा करें। उचित पुरस्कार और दण्ड क्या हैं?

(1) उचित रूप से पुरस्कार।

माता-पिता को अपने बच्चों को सही तरीक़े से रहने के लिए प्रोत्साहित करने और उन्हें पुरस्कृत करने के विभिन्न तरीकों को तैयार करना चाहिए।

(2) सम्भावित पुरस्कार जो बच्चे को सही तरीके से चलना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं :

- सही काम करने के लिए बच्चे को धन्यवाद दें और उसकी प्रशंसा करें (सराहें)।
- बच्चे को गले लगाएँ और उस पर पूरा ध्यान दें।
- बच्चे को बाहर घुमाने के लिए ले जाएँ जिसकी वह कामना करता है।
- बच्चे को अपने मित्रों से मिलने की और अधिक स्वतंत्रता दें।
- बच्चे को किसी तरह का पुरस्कार दें।

5. अनुशासन का मतलब उचित दण्ड देना है।

खोजें और चर्चा करें। उचित पुरस्कार और दण्ड क्या हैं?

(1) उचित रूप से दण्डित करें।

माता-पिता को अपने बच्चों को गलत कार्यों से पश्चाताप करने के बाद सही मार्ग पर वापस आने के लिए प्रेरित करने के लिए विभिन्न प्रकार के दण्ड की भी तैयारी करनी चाहिए।

(2) सम्भावित दण्ड जो बच्चे को अपने गलत तरीक़े को बदलने के लिए प्रेरित करते हैं :

- बच्चे को उसके अपराध के लिए डाँटें, लेकिन उसके चरित्र को बुरा भला न कहें (मारे न)।
- उसे अपने से अलग करके (अलग कमरे में) अपने अपराध के बारे में सोचने का अवसर दें।
- बच्चे के साथ बाहर जाने की बनायी गयी योजना को रद्द करें।
- मित्रों से मिलने की उसकी स्वतंत्रता को कम करें।
- उसके कुछ जेब खर्च को देना बन्द करें।
- उसे घर के कुछ कार्यों को सौंपें।
- जब वास्तव में ज़रूरी हो, तो बच्चे को छड़ी से दण्डित करें।

(3) बचाने के उद्देश्य से दण्डित करें।

पढ़ें आमोस 4:6-12; हाग्गै 1:2-11; लूका 12:47-48; गलातियों 6:7-8

ध्यान दें। परमेश्वर वर्तमान समय में लोगों को अनन्त दण्ड से बचाने के लिए अस्थायी दण्ड के साथ दण्डित करता है (मत्ती 25:46)।

- परमेश्वर अपने लोगों को बुराई से फिरने और स्वयं को परमेश्वर के अधीन करने के लिए राष्ट्र को भी जड़ से उखाड़ फेंकेगा (यिर्मयाह 18:5-17)। जीवित परमेश्वर लोगों को भूख, सूखे, फसल के न पकने, बीमारी या महामारी, युद्ध में हार और उनके नगरों के विनाश के द्वारा लोगों को दण्डित करता है ताकि वह उन्हें अपनी ओर फिरने के लिए प्रेरित कर सके (यहेजकेल 14:21; आमोस 4:6-12)।
- परमेश्वर फसल के खराब होने, धन के समाप्त होने और सब कुछ नाश करने के द्वारा अपने लोगों को दण्डित करता है ताकि वह इन विफलताओं के द्वारा उनके दैनिक जीवन में परमेश्वर के विरुद्ध पापी अवहेलना को करने से रोकने के लिए प्रेरित कर सके (हाग्गै 1:2-11)।
- "प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।" (1 कुरिन्थियों 11:32)। परमेश्वर वर्तमान में अपने लोगों को नरक के अनन्त दण्ड से बचाने के लिए अस्थायी दण्ड देकर दण्डित करता है। परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र और न्यायी है और उसका दण्ड भी हमेशा पूरी तरह से निष्पक्ष और न्यायी होता है (लूका 12:47-48)। परमेश्वर चाहता है कि सब उसे गंभीरता से लें और वह यह इच्छा करता है कि पृथ्वी पर लोग अपना जीवन पवित्रता के साथ व्यतीत करें (गलातियों 6:7-8)।

(4) तुरन्त दण्डित करें।

- ***पढ़ें*** सभोपदेशक 8:11 - बाइबल बताती है, "बुरे काम के दण्ड की आज्ञा फुर्ती से नहीं दी जाती; इस कारण मनुष्यों का मन बुरा काम करने की इच्छा से भरा रहता है" (वे हर बार गलत कार्य करने के वे नये-नये तरीके अपनाते हैं)।
- ***ध्यान दें।*** जब किसी देश की सरकार अपराधियों को उसी समय दण्डित नहीं करती है, तो अपराधी और भी अहंकारी हो जाते हैं और वे बहुत से अपराध करते हैं! इसी तरह, जब माता-पिता अपने बच्चे को उसी समय और स्पष्टता से अनुशासित नहीं करते हैं, तो बच्चा आश्चर्यचकित होकर यह सोचता है कि उनके माता-पिता उनके प्रति गंभीर हैं भी या नहीं। इसकी वजह से वह बच्चा और भी अहंकारी होकर और अधिक गलत कामों को करेगा। और इससे दूसरा बच्चा और अधिक असुरक्षित हो जाएगा जिससे मनोवैज्ञानिक समस्याएँ उत्पन्न हो

सकती हैं।

(5) प्रेम से दण्डित करें।

- ***पढ़ें*** भजन 89:30-34
- ***ध्यान दें।*** जब भी परमेश्वर की वाचा की सन्तानें उसकी आज्ञाओं को मानने में असफल होती हैं, तब वह उन्हें दण्डित करता है। फिर भी, वह कभी उनसे प्रेम करना नहीं छोड़ता! "जो बेटे पर छड़ी नहीं चलाता वह उसका बैरी है, परन्तु जो उससे प्रेम रखता, वह यत्न से उसको शिक्षा देता है" (नीतिवचन 13:24)।

(6) यदि आवश्यक हो तो छड़ी से दण्डित करें।

पढ़ें नीतिवचन 13:24; 19:18; 20:30; 22:15; 23:13-14; 29:15,17

ध्यान दें। दुनिया की किसी भी सरकार के पास यह अधिकार नहीं है कि वह किसी के बच्चों को अनुशासन का उपयोग करने के सम्बन्ध में परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञाओं को मानने से रोके। प्रत्येक सरकार जो बाइबल में पाई जाने वाली परमेश्वर की शिक्षाओं तथा आज्ञाओं को त्यागती हैं, और परमेश्वर का इंकार करती हैं, अंतिम न्याय के दिन परमेश्वर भी उनका इंकार करेगा (भजन 2; नीतिवचन 1:28-33; प्रेरितों के काम 4:19-20; 5:29; 1 थिस्सलुनिकियों 4:8; 2 थिस्सलुनिकियों 1:8-10)!

बाइबल इस बात के कई महत्वपूर्ण कारण बताती है कि कभी-कभी बच्चे को छड़ी से क्यों दण्डित करना चाहिए। पेड़ की लचीली शाखा से काटी गयी "एक छड़ी" से। यह कोड़े मारना नहीं है। जब एक बच्चा अपने स्वयं के मार्ग पर चलने लगता है, तो वह अपराध में पड़ सकता है (नीतिवचन 4:14-15) या अपने बुरे व्यवहार के द्वारा कुछ और गंभीर परिणामों को अपने ऊपर ला सकता है (1 कुरिन्थियों 11:30)। लेकिन जब उसे उसके आज्ञा न मानने वाले या हठीले व्यवहार के लिए उसी समय दण्डित किया जाता है, तो वह संभवत: अपराधी नहीं बनेगा या अपने व्यवहार के बुरे परिणामों के कारण न मारेगा। बाइबल सिखाती है, "लड़के की ताड़ना करना न छोड़ना; क्योंकि यदि तू उसको छड़ी से मारे, तो वह न मरेगा। तू उसको छड़ी से मारकर उसका प्राण अधोलोक से बचाएगा" (या : उसकी आत्मा को नरक से बचाएगा") (नीतिवचन 23:13-14)। और, "चोट लगने से जो घाव होते हैं, वह बुराई दूर करते हैं; और मार खाने से हृदय निर्मल हो जाता है" (नीतिवचन 20:30)। कभी-कभी किसी बच्चे को छड़ी का उपयोग करके दण्डित करना आवश्यक होता है, क्योंकि इसके द्वारा उसका अन्दरूनी मनुष्यत्व शुद्ध होगा और उसकी आत्मा को बचाने का यही एकमात्र तरीक़ा है।

हालाँकि, बच्चे को ऐसी किसी भी जगह न मारें जो स्थायी क्षति का कारण बन जाए। इसके अलावा बच्चे को अपने हाथ से मारना भी अच्छा नहीं है, क्योंकि अगली बार वह आपके हाथों से भी डरना शुरू कर सकता है। बल्कि हमेशा छड़ी का उपयोग दण्ड के प्रतीक और सजा के साधन के रूप में करें। यदि बच्चा किसी भी प्रकार का अपराध करता है तो उसे छड़ी से डरना चाहिए, लेकिन उसे अपने माता-पिता या उनके हाथों के प्रति भय को उत्पन्न नही करना चाहिए।

कुछ अन्य ऐसे कारण जब समय आने पर छड़ी से मारना आवश्यक है। बाइबल सिखाती है, "लड़के के मन में मूढ़ता बन्धी रहती है, परन्तु छड़ी की ताड़ना के द्वारा वह उससे दूर की जाती है" (नीतिवचन 22:15)। और, "छड़ी और डाँट से बुद्धि प्राप्त होती है, परन्तु जो लड़का योंही छोड़ा जाता है वह अपनी माता की लज्जा का कारण होता है। अपने बेटे की ताड़ना कर, तब उससे तुझे चैन मिलेगा; और तेरा मन सुखी हो जाएगा" (नीतिवचन 29:15,17)। बच्चे कभी-कभी मूर्खता के कार्य करते हैं, अपने माता-पिता के प्रति अपमानजनक व्यवहार करते हैं, बुरे कार्य या अपराध करते हैं। नीतिवचन के विभिन्न वचन सिखाते हैं कि बच्चे को एक शुद्ध विवेक देने और घर में शान्ति बनाये रखने के लिए कभी-कभी छड़ी से दण्डित करना आवश्यक है। उसे बुराई और मूर्खता से दूर करने के लिए, और उसकी आत्मा को मृत्यु से बचाने के लिए यह आवश्यक है! जब एक माता-पिता अपने बच्चों को तुरन्त दण्डित करते हैं, तो बच्चा संभवत: बुद्धिमान बनेगा तथा घर और बच्चों व माता-पिता के हृदय में शान्ति वापस लौट आएगी!

आमतौर पर, जब बच्चे किशोरावस्था में आते हैं, तो माता-पिता को उन्हें छड़ी से मारकर दण्डित नहीं करना

चाहिए। तब अनुशासन का प्रयोग ठीक उसी प्रकार किया जाना चाहिए जैसा कि अपराध करने वाले वयस्कों के साथ किया जाता है।

6. अनुशासन का अर्थ है लगातार आज्ञाकारिता की अपेक्षा करना।

पढ़ें सभोपदेशक 5:5

खोजें और चर्चा करें। यदि कोई माता-पिता अपने बच्चे को सिर्फ डराते रहते हैं कि वह उन्हें दण्डित करेंगे, लेकिन वह उन्हें दण्डित नहीं करते, तो उसके क्या परिणाम हो सकते हैं?

ध्यान दें। सभोपदेशक 5:5 सिखाता है, "मन्नत मानकर पूरी न करने से मन्नत का न मानना ही अच्छा है"। केवल डराना ही अच्छा विकल्प नहीं है, उदाहरण के लिए, "यदि तुम ऐसा नहीं करोगे, तो मैं तुम्हे दण्ड दूँगा!" डराने से बच्चे के अन्दर दण्ड के साथ जीने का भय पैदा हो सकता है, या वो दण्ड से बचने के लिए झूठ बोलना आरम्भ कर सकता है, या गुप्त रूप से दण्ड से बचने के लिए साजिश रच सकता है। यही कारण है कि दण्डित करने का भय उत्पन्न करना आमतौर पर एक बच्चे को अनुशासित करने का एक उपयोगी तरीक़ा नहीं है। दण्डित करने का भय उत्पन्न करने के बजाय, माता-पिता अपने बच्चे को उसके गलत व्यवहार के परिणामों के बारे में सोचने में उसकी सहायता कर सकते हैं। हालाँकि, अगर कोई माता-पिता इस प्रकार का भय पैदा करता है, तो उसे इस भय को बाहर भी निकालना चाहिए! अगर माता-पिता उस भय को दिखाने में नाकाम रहते हैं, तो बच्चा इस बात से आश्वस्त हो जाता है कि वह अपने माता-पिता पर भरोसा या विश्वास नहीं कर सकता।

लगातार आज्ञाकारिता की अपेक्षा रखना भय उत्पन्न करने की तुलना में काफी बेहतर है। माता-पिता को अपने बच्चे के पालन-पोषण को लेकर परेशान नहीं होना चाहिए। उन्हें अपने बच्चे को मनमानी भी नहीं करनी देनी चाहिए। अगर माता-पिता अपने बच्चे की आज्ञा मानने या उसकी इच्छाओं को पूरा करने के लिए तैयार रहते हैं, तो उनके बच्चे हमेशा आज्ञा का पालन करने या सजा से बचने के लिए इस प्रकार की योजना बनाएँगे! आज्ञाकारिता के क्षेत्र में, माता-पिता को अपने बच्चे को कोई विकल्प नहीं देना चाहिए, लेकिन बच्चे की अनुचित माँग भी पूरी नहीं करनी चाहिए! अनुशासन का मतलब लगातार आज्ञाकारिता की अपेक्षा करना है!

7. अनुशासन का अर्थ पश्चाताप या दण्ड के बाद बच्चे को सांत्वना देना है।

खोजें और चर्चा करें। बच्चे के लिए क्षमा और आश्वासन क्यों महत्वपूर्ण है?
पढ़ें लूका 17:3; 2 कुरिन्थियों 2:5-8
ध्यान दें। बच्चे के स्वयं के पाप से पश्चाताप या माता-पिता को उसके अपराध के लिए दण्डित करने के बाद, उसे क्षमा कर देना चाहिए, उसे सांत्वना देनी चाहिए और उसे अपने प्रेम से आश्वस्त करना चाहिए! यदि माता-पिता ऐसा नहीं करते हैं, तो वह शैतान को अपने बच्चे के जीवन में क़दम रखने का अवसर देते हैं और उनका बच्चा द्वेष से भरकर बदला लेने वाला बन सकता है। यदि माता-पिता पश्चाताप करने और दण्ड देने के बाद अपने बच्चे को क्षमा करने और आश्वस्त करने में विफल रहते हैं, तो फिर बच्चे के लिए यह विश्वास करना बहुत मुश्किल हो जाता है कि परमेश्वर पाप से पश्चाताप करने के बाद उन्हें क्षमा, शान्ति और आश्वासन देगा! बाइबल सिखाती है कि, दण्ड के बाद, माता-पिता को अपने बच्चे को क्षमा कर देना चाहिए और उन्हें शान्ति देनी चाहिए, ताकि वह अत्यधिक दु:ख से व्याकुल न हो। माता-पिता को यह पुष्टि करनी चाहिए की वह अपने बच्चे से प्रेम करते हैं। अपने बच्चे के साथ प्रार्थना करें, और उसे गले लगायें तथा उसे यह बतायें कि उसके माता-पिता उससे प्रेम करते हैं यह पुष्टिकरण का सबसे अच्छा तरीक़ा है।

पढ़ें नीतिवचन 17:9; इब्रानियों 8:12; मत्ती 18:35
ध्यान दें। पाप को 'भूलना' और 'पाप को स्मरण न दिलाने' के बीच पाए जाने वाले अन्तर का ध्यान रखें। दूसरी बात की अपेक्षा करते हुए परमेश्वर यह अपेक्षा करता है कि उसके अनुयायी भी ऐसा ही करें। जब माता-पिता अपने बच्चे को किसी विशेष अपराध के लिए क्षमा कर देते हैं, तो उन्हें फिर से इस मुद्दे को अन्य परिस्थितियों

में नहीं लाना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से बच्चे को यह लगेगा कि उसके माता-पिता ने उसके पिछले अपराध के बाद उसे वास्तव में क्षमा नहीं किया! परमेश्वर के समान, माता-पिता को पिछले अपराधों का ज़िक्र नहीं करना चाहिए। यदि भविष्य में, माता-पिता के मन में अभी भी उस पिछले अपराध के प्रति कोई नाराज़गी होती है, तो उसे पहले अपने बच्चे को अपने हृदय में क्षमा करने की आवश्यकता है।

8. अनुशासन का मतलब बच्चे को प्रोत्साहित करना है।

पढ़ें कुलुस्सियों 3:21; नीतिवचन 15:1

खोजें और चर्चा करें। पिता अपने बच्चों को किस प्रकार रिस (क्रोध) दिलाते हैं? और वे कौन-से तरीके हैं जिनमें पिता अपने बच्चों को प्रोत्साहित कर सकते हैं?

ध्यान दें।

(1) बच्चों को रिस (क्रोध) दिलाने के तरीके।

माता-पिता को अपने बच्चे को बहुत अधिक या बहुत कम अनुशासन में रखकर रिस या क्रोध नहीं दिलाना चाहिए। कुलुस्सियों 3:21 कहता है, "हे बच्चेवालों, अपने बालकों को तंग न करो, न हो कि उनका साहस टूट जाए"। "रिस दिलाने" का अर्थ है तंग करना, परेशान करना या क्रोध दिलाने का कारण बनना। माता-पिताओं को अपने बच्चे को दृढ़ता से अनुशासित करना चाहिए, न कि गुस्से से। उन्हें अपने बच्चे के चरित्र के विषय में आलोचनात्मक या नकारात्मक बातें नहीं बोलनी चाहिए, उदाहरण के लिए बच्चे को यह न कहे कि, "*तुम बेवकूफ हो!*" "*तुम बदसूरत हो!*" "*तुम कभी समय पर नहीं आते!*" "*तुम आलसी हो!*" इसे चरित्र को मारना कहा जाता है और इससे बाद में बच्चे के व्यक्तित्व में गंभीर मनोवैज्ञानिक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं। ऐसे कई तरीक़े हैं जिनमें माता-पिता अपने बच्चों को हतोत्साहित कर सकते हैं। बच्चों को हतोत्साहित करने का एक तरीक़ा उन पर क्रोधित होकर चिल्लाना और उनके चरित्र के बारे में बहुत बुरी बातें कहना है, खासकर अन्य लोगों के सामने उन्हें शर्मिन्दा करना! नीतिवचन 15:1 सिखाता है, "कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है"। माता-पिता के प्रति अपने बच्चों की प्रतिक्रियाओं को देखकर, वह यह जान सकते हैं कि कौन-सी बातें उनके बच्चों को हतोत्साहित करती हैं। उदाहरण के लिए बच्चों का परेशान हो जाना, गुस्से हो जाना, उदास हो जाना, अपने माता-पिता को छोड़ देना आदि। ये प्रतिक्रियाएँ एक संकेत हैं कि माता-पिता को अपने बच्चों के साथ *अपने व्यवहार के दृष्टिकोण को बदलना चाहिए*। अनुशासन के द्वारा बच्चा सही दिशा में मुड़ना चाहिए, लेकिन उससे उसकी आत्मा को ठेस नहीं पहुँचनी चाहिए!

(2) बच्चों को प्रोत्साहित करने के तरीके।

बच्चों के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए रखें। उनके साथ उन चीज़ों या वस्तुओं के रूप में व्यवहार न करें जिसके द्वारा केवल उन्हें देखा जाए, लेकिन उनकी कोई सुनने वाला न हो। जो कुछ माता-पिता और शिक्षक बचपन के दौरान उनके जीवन में बोते हैं, वही बातें वयस्क होने पर इन बच्चों की फसल का हिस्सा बन जाएँगी (गलातियों 6:7-8)। प्रत्येक बच्चे को अपने माता-पिता और शिक्षकों के साथ व्यक्तिगत, मित्रभाव, प्रेमपूर्ण और नियमित सम्बन्ध बनाये रखने की आवश्यकता होती है। इसलिए, भले ही आपके पास समय न हो, तो भी समय निकालकर बच्चों व विशेष रूप से किशोरों और युवा वयस्कों के साथ समय को रचनात्मक रूप से बिताएँ। प्रत्येक बच्चा, किशोर और युवा वयस्क चाहता है कि उसकी पहचान हो, उसका महत्व हो और सब उससे प्रेम करें।

बच्चे, किशोर या युवा वयस्क को नियमित रूप से यह बताएँ कि आप उससे प्रेम करते हैं! विशेषरूप से कुछ संस्कृतियों में पिता को अपने बच्चों के साथ समय बिताना, अपने बच्चों से बात करना और अपने बच्चों को स्नेह करना, यानी उन्हें गले लगाना सीखना चाहिए। कई किशोर और युवा वयस्क शिकायत करते हैं कि उनके पिता के साथ उनका कोई सम्बन्ध या बातचीत नहीं है! उनके सांसारिक पिता के साथ उनकी निराशा उनके स्वर्गीय पिता पर भरोसा न करने का कारण बन सकती है। और उनके सांसारिक पिता के साथ उनका एक अच्छा सम्बन्ध उन्हें पिता परमेश्वर के साथ अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करेगा। बातचीत में न केवल

स्कूल और धन के मामले होने चाहिए, बल्कि दुनिया के हर महत्वपूर्ण और दिलचस्प विषय भी शामिल होने चाहिए। बच्चों के साथ मिलकर दिलचस्प, रचनात्मक और चुनौतीपूर्ण बातें भी करें।

उनके मित्रों में वास्तविक रुचि को दिखाएँ। उन्हें अपने दोस्तों के बारे में बात करने दें। उनके दोस्तों को अपने घर में आमंत्रित करें। उनके दोस्तों के साथ भोजन करें और उनके साथ बाहर घूमने जाएँ। बच्चे तब प्रोत्साहित होते हैं जब उनके माता-पिता और शिक्षक उनके मित्रों को स्वीकार करते हैं और उनका स्वागत करते हैं।

बच्चों, किशोरों और युवा वयस्कों को उनके गृहकार्य और पढ़ाई में सहायता करें। उन्हें सलाहकारों और मार्गदर्शकों की आवश्यकता होती है और अक्सर उन्हें उनकी पढ़ाई में दृढ़ता से प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है।

जब बच्चे छोटे हों तो कभी-कभी उन्हें पुरस्कृत करें। बच्चों और किशोरों की उन बातों में प्रशंसा करें जिन्हें वे अच्छी तरह से करते हैं। और जब भी वे इसके लायक हों, तो किशोरों और युवा वयस्कों को यह बताएँ कि आपको उन पर और उनके द्वारा किए गए कामों पर गर्व है।

बच्चों और किशोरों को यह विश्वास दिलाएँ कि आप उन पर भरोसा करते हैं। उन्हें ज़िम्मेदारियाँ दें और जब वे अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर लें तब उनकी प्रशंसा करें।